अव्यक्त इशारे
हर खजाने को सफल कर सफलतामूर्त बनो

1) समय प्रमाण अब हर खजाने को सफल कर सफलता प्राप्त करो। सफलता प्रत्यक्षता को स्वत: ही प्रत्यक्ष करेगी। वाचा की सेवा बहुत अच्छी की है लेकिन अब सफलता के वरदान द्वारा बाप की, स्वयं की प्रत्यक्षता को समीप लाओ। हर एक ब्राह्मणों की जीवन में सर्व खजानों की सम्पन्नता का आत्माओं को अनुभव हो।
2) किसी भी प्रकार का अलबेलापन खजानों को वेस्ट कर देता है, तो वेस्ट नहीं करना, एक से दस गुना बढ़ाना। जिसको बापदादा कहते कम खर्चा बाला नशीन | ये है बढाना और वो है गँवाना। तो तन मन और धन को सदा सफल करने वाली ऑनेस्ट आत्मा बनो।
3) कोई भी समर्थ संकल्प आत्मिक शक्ति अर्थात् एनर्जी जमा करता है, समय भी सफल करता है। व्यर्थ संकल्प एनर्जी और समय को व्यर्थ गंवाता है इसलिए अब व्यर्थ संकल्प की रचना बन्द करो। यह रचना ही आत्मा रचता को परेशान करने वाली है इसलिए सदा इसी शान में रहो कि मैं आत्मा मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, समर्थ आत्मा हूँ तो कभी परेशान नहीं होंगे और अनेकों की परेशानी को मिटाने वाले बन जायेंगे।
4) अपने हर श्रेष्ठ संकल्प को सफल करने वा स्वयं को सम्पन्न बनाने के लिए ट्रस्टी बनकर रहो। ट्रस्टी बनना अर्थात् डबल लाइट फरिश्ता बनना। एक श्रेष्ठ संकल्प बच्चे का और हजार श्रेष्ठ संकल्प का फल बाप द्वारा प्राप्त हो जाता है। एक का हजार गुणा मिल जाता है।
5) जैसे आजकल सूर्य की शक्ति जमाकर कई कार्य सफल करते हैं। ऐसे ही संकल्प की शक्ति इकट्ठी की हुई हो तो उससे औरों में भी बल भर सकते हो। कार्य सफल कर सकते हो। जो हिम्मतहीन हैं उन्हें हिम्मत देनी है, वाणी से भी हिम्मत आती है लेकिन सदाकाल की नहीं। वाणी के साथ-साथ श्रेष्ठ संकल्प की सूक्ष्म शक्ति ज्यादा कार्य करेगी, वर्तमान समय इसी की आवश्यकता है।
6) विजयीपन के निश्चय वा त्रिकालदर्शीपन के आधार पर जो भी कार्य करेंगे वह कभी व्यर्थ वा असफल नहीं होगा। सिर्फ वर्तमान समय को समझना, इसको सम्पूर्ण नहीं कहेंगे, यदि कोई भी कार्य में असफलता होती वा व्यर्थ हो जाता है तो इसका कारण तीनों कालों को सामने रखते हुए कार्य नहीं करते हो।
7) सदा सक्सेसफुल व सफलतामूर्त बनने के लिए अपनी स्टेज 'इच्छा मात्रम् अविद्या' की बनाओ। अगर स्वयं सफलतामूर्त नहीं होंगे तो अनेक आत्माओं के संकल्प को सफल नहीं कर सकेंगे। जो सम्पन्न नहीं उसकी इच्छायें जरूर होंगी क्योंकि सम्पन्न होने के बाद ही 'इच्छा मात्रम् अविद्या' की स्टेज आती है।
8) ब्रह्मा बाप ने सम्पूर्ण बनने के लिए अपने सर्व खजाने आदि से अन्तिम दिन तक सफल किये, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण देखा - सम्पूर्ण फरिश्ता बन गया। तो लक्ष्य रखो मुझे बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना ही है। कुछ भी पुरुषार्थ करना पड़े लेकिन निश्चित है कि बाप समान बनना ही है।
9) ब्रह्मा बाप सम्पूर्ण कैसे बने ? उनकी क्या विशेषता रही? सम्पूर्णता का विशेष आधार क्या

रहा? ब्रह्मा बाप ने अपना हर समय सफल किया। श्वांस-श्वांस, सेकण्ड - सेकण्ड सफल किया। तो बाप समान बनने के लिए लक्ष्य रखो कि सफल करना है और सफलतामूर्त बनना है।

10) साकार रूप में कर्म सिखलाने के लिए पूरे 84 जन्म लेने वाली ब्रह्मा की आत्मा निमित्त बनी। कर्म बन्धनों से मुक्त होने में, कर्म सम्बन्ध को निभाने में, देह में रहते विदेही स्थिति में स्थित रहने में, तन के बन्धनों को मुक्त करने में, मन की लगन में मगन रहने की स्थिति में, धन का एक-एक नया पैसा सफल करने में, साकार ब्रह्मा साकार जीवन में निमित्त बने। कर्मबन्धनी आत्मा, कर्मातीत बनने का एक्जैम्पुल बने। तो फालो फादर करो।

11) जैसे यादगार के यज्ञ में आहुति सफल तब होती है जब मन्त्र जपते हैं। यहाँ भी सदा मन्मनाभव मन्त्र स्मृति में रहे तब हु सफल हो। तो मन्त्र स्वरूप में स्थित होने वाले बनो सिर्फ मंत्र बोलने वाले नहीं। कोई भी यज्ञ रचा जाता है तो वह सफल तब होता है जब सम्पूर्ण आहुति डाली जाती है। जरा भी आहुति की कमी रह गयी तो सम्पूर्ण सफलता नहीं होगी। तो जो कुछ भी आहुति में देना है वह सम्पूर्ण देना है और फिर सम्पूर्ण लेना है।

12) कोई भी कार्य में सफलता प्राप्त करने का साधन है संगठित रूप में सबके शुभ संकल्प, उमंग-उत्साह के संकल्प। ऐसे संकल्प असफलता को मिटा देते हैं। जैसे किला कमजोर तब होता है जब कोई एक भी ईट हिलती है। यदि सब ईटे मजबूत हैं तो किला कभी हिल नहीं सकता। तो संगठन में सबका उमंग-उत्साह और श्रेष्ठ संकल्प हो, सहयोग हो तो सफलता हुई पड़ी है। यदि किसी भी कार्य में उमंग-उत्साह नहीं है तो थकावट होगी और थका हुआ कभी सफल नहीं हो सकता।

13) जैसे ब्रह्मा बाप ने निश्चय के आधार पर, रूहानी नशे के आधार पर निश्चित भावी के ज्ञाता बन सेकेण्ड में सब कुछ सफल कर दिया; अपने लिए नहीं रखा, सफल किया, जिसका प्रत्यक्ष सबूत देखा कि अन्तिम दिन तक तन से पत्र-व्यवहार द्वारा सेवा की, मुख से महावाक्य उच्चारण किये। अन्तिम दिन भी समय, संकल्प, शरीर को सफल किया। तो सफल करने का अर्थ ही है श्रेष्ठ तरफ लगाना। ऐसे जो सफल करते हैं उन्हें सफलता स्वतः प्राप्त होती है।

14) सफलता प्राप्त करने का विशेष आधार है-हर सेकेण्ड, हर श्वांस, हर खजाने को सफल करना। संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध- सम्पर्क जिसमें भी सफलता अनुभव करने चाहते हो तो स्व के प्रति चाहे अन्य आत्माओं के प्रति सफल करते जाओ। व्यर्थ न जाने दो तो ऑटोमेटिकली सफलता के खुशी की अनुभूति करते रहेंगे क्योंकि सफल करना अर्थात् वर्तमान के लिए सफलता मूर्त बनना और भविष्य के लिए जमा करना।

15) सेवा में सफलता प्राप्त करने के लिए समर्पण भाव और बेफिक्र स्थिति चाहिए। सेवा में जरा भी मेरेपन का भाव मिक्स न हो। कोई भी बात का फिक्र न हो क्योंकि फिक्र करने वाला समय भी गंवाता, इनर्जी भी व्यर्थ जाती और काम भी गंवा देता है। वह जिस काम के लिए फिक्र करता वह काम ही बिगड़ जाता है।

16) सदा सफलता मूर्त बनने का साधन है एक बल एक भरोसा। निश्चय सदा ही निश्चित बनाता है और निश्चित स्थिति वाला जो भी कार्य करेगा उसमें सफल जरूर होगा। इसके लिए जमा करने की विधि को अपनाओ तो व्यर्थ का खाता स्वत: ही परिवर्तन हो सफल हो जायेगा। बाप

द्वारा जो भी खजाने मिले हैं उनका दान करो, कभी भी स्वप्न में भी गलती से प्रभु देन को अपना नहीं समझना। मेरा यह गुण है, मेरी शक्ति है - यह मेरापन आना अर्थात् खजानों को गंवाना।

17) अपने ईश्वरीय संस्कारों को भी सफल करो तो व्यर्थ संस्कार स्वत: ही चले जायेंगे। ईश्वरीय संस्कारों को बुद्धि के लॉकर में नहीं रखो। कार्य में लगाओ, सफल करो। सफल करना माना बचाना या बढ़ाना। मंसा से सफल करो, वाणी से सफल करो, सम्बन्ध- सम्पर्क से, कर्म से, अपने श्रेष्ठ संग से, अपने अति शक्तिशाली वृत्ति से सफल करो। सफल करना ही सफलता की चाबी है।

18) आपके पास समय और संकल्प रूपी जो श्रेष्ठ खजाने हैं, इन्हें "कम खर्च बाला नशीन" की विधि द्वारा सफल करो। संकल्प का खर्च कम हो लेकिन प्राप्ति ज्यादा हो। जो साधारण व्यक्ति दो चार मिनट संकल्प चलाने के बाद, सोचने के बाद सफलता या प्राप्ति कर सकता है वह आप एक दो सेकेण्ड में कर सकते हो। ऐसे ही वाणी और कर्म, कम खर्चा और सफलता ज्यादा हो तब ह कमाल गाई जायेगी।

19) सफलता प्राप्त करने का आधार है सत्यता। लेकिन सत्यता में सभ्यता समाई हुई हो। सभ्यता पूर्वक बोल, सभ्यता पूर्वक चलन इसमें ही सफलता होती है। सफलता मूर्त बनने की सहज विधि है - सर्व की दुआयें। जिन बच्चों को बाप की दुआएं वा सर्व आत्माओं की दुआएं प्राप्त होती हैं उन्हें मेहनत का अनुभव नहीं होता। वह सदा सफल होते हैं।

20) बापदादा द्वारा जो हर बच्चे को दिव्य बुद्धि का वरदान मिला है उस वरदान को कार्य में लगाओ अर्थात् यूज़ करो। कोई भी चीज़ यूज करने से, कार्य में लगाने से बढ़ती भी है और उसको सुख की, खुशी की अनुभूति भी होती है। हर कार्य में दिव्यता है तो यह दिव्यता ही सफलता का आधार है।

21) आपके पास जो भी प्रापर्टी है, समय, संकल्प, श्वांस, तन- मन-धन सब सफल करो, व्यर्थ नहीं गंवाओ, न आइवेल के लिए सम्भालकर रखो। ज्ञान धन, शक्तियों का धन, गुणों का धन हर समय मैं पन से न्यारे बन सफल करो तो जमा होता जायेगा। सफल करना अर्थात् पदमगुणा सफलता का अनुभव करना।

22) समय की समीपता के कारण नई-नई बातें, संस्कार, हिसाब-किताब के काले बादल आयेंगे लेकिन कितने भी काले बादल आयें आप अपनी उड़ती कला की स्टेज पर स्थित रहना तो गहरे काले बादल भी बिखर जायेंगे और आप दृढ़ता के बल से सफल हो जायेंगे। सिर्फ छोटा सा स्लोगन याद रखना कि "सफल करके सफलता पानी है।"

23) जो भी आपके पास प्रापर्टी है - समय, संकल्प, श्वांस वा तन-मन-धन सब मैं पन से न्यारे होकर सच्ची दिल से सफल करो, तो जमा होता जायेगा। हर सेकण्ड जो भी संकल्प करो, कर्म करो- हर कर्म, हर संकल्प बधाई वाला हो। जो भी मिले वा जो भी साथ में रहते हैं, उन्हों को सदा खुशी की, दिलखुश मिठाई खिलाते रहो और सदा खुशी में मन से नाचते रहो। सेवा में सभी को खुशी का खजाना भर-भरकर बांटते रहो। यही सफल करने की विधि है।

24) सदा अपने को डबल लाइट समझकर सेवा करते चलो। जितना सेवा में हल्कापन होगा उतना

सहज उड़ेंगे, उड़ायेंगे। डबल लाइट बन सेवा करना, याद में रहकर सेवा करना - यही सफलता का आधार है। किसी भी बात में स्वयं को कभी भी भारी नहीं बनाओ। सदा डबल लाइट रहने से संगमयुग के सुख के दिन रूहानी मौजों के दिन सफल होंगे। संगमयुग का एक-एक दिन वैल्युबुल है, महान है, कमाई करने का समय है, ऐसे कमाई के समय को सफल करते चलो।

25) मन में यह संकल्प उठना कि विजयी तो अन्त में बनेंगे व अन्त में निर्विघ्न और विघ्न विनाशक बनेंगे - यह संकल्प ही रॉयल रूप का अलबेलापन है अर्थात् रॉयल माया है; यह सम्पूर्ण बनने में विघ्न डालता है। यही अलबेलापन सफलतामूर्त और समान-मूर्त बनने नहीं देता है इसलिए इन संकल्पों से मुक्त बन विघ्न विनाशक स्थिति बनाओ, इससे सर्व शक्तियाँ सफल हो जायेंगी।

26) जो अपनी सूक्ष्म शक्तियों को हैंडल कर सकता है, वह दूसरों को भी हैंडल कर सकता है। तो स्व के ऊपर कन्ट्रोलिंग पावर, रुलिंग पावर सर्व के लिए यथार्थ हैंडलिंग पावर बन जाती है। चाहे अज्ञानी आत्माओं को सेवा द्वारा हैंडिल करो, चाहे ब्राह्मण- परिवार में स्नेह सम्पन्न, सन्तुष्टता सम्पन्न व्यवहार करो - दोनों में सफल हो जायेंगे।

27) अगर चलते-चलते कभी असफलता या मुश्किल का अनुभव होता है तो उसका कारण सिर्फ खिदमतगार बन जाते हो। खुदाई खिदमतगार नहीं होते। खुदा को खिदमत से जुदा नहीं करो। जब नाम है खुदाई खिदमतगार। तो कम्बाइन्ड को अलग क्यों करते हो। सदा अपना यह नाम याद रखो तो सेवा में स्वत: ही खुदाई जादू भर जायेगा और सहज सफलतामूर्त बन जायेंगे।

28) ब्राह्मण जीवन में पवित्रता की ऐसी पर्सनैलिटी धारण करो जो आपकी इनर्जी, समय, संकल्प सब सफल होता रहे। कुछ भी व्यर्थ न जाए। छोटी-छोटी बातों में अपने मन- -बुद्धि को बिज़ी नहीं रखना। अपवित्रता की बातों को सुनते हुए नहीं सुनना। देखते हुए नहीं देखना। जैसे जिन चीज़ों से आपका कनेक्शन नहीं है, उन्हें देखते हुए नहीं देखते हो। रास्ते पर जाते हो, कहीं कुछ दिखाई देता है परन्तु आपके मतलब की बात नहीं है, तो देखते हुए नहीं देखते हो। साइड सीन समझ कर पार कर लेते हो, ऐसे जो बातें सुनते हो, देखते हो, आपके काम की नहीं हैं, तो सुनते हुए नहीं सुनो, देखते हुए नहीं देखो।

29) इस ब्राह्मण जीवन में जो समय को सफल करते हैं वह समय की सफलता के फलस्वरूप राज्य-भाग्य का फुल समय राज्य- अधिकारी बनते हैं। जो श्वांस सफल करते हैं, वह अनेक जन्म सदा स्वस्थ रहते हैं। कभी चलते-चलते श्वांस बन्द नहीं होगा, हार्ट फेल नहीं होगा।

30) सदा ज्ञान का खजाना सफल करते रहो तो भविष्य में ऐसे समझदार बन जायेंगे जो अनेक वजीरों की राय नहीं लेनी पड़ेगी, स्वयं ही समझदार बन राज्य- भाग्य चलाते रहेंगे। सर्व शक्तियों का खजाना सफल करो अर्थात् श्रेष्ठ कार्य में लगाओ तो सर्व शक्ति सम्पन्न बन जायेंगे। आपके भविष्य राज्य में कोई शक्ति की कमी नहीं होगी। सर्व शक्तियां स्वत: ही अखण्ड, अटल, निर्विघ्न कार्य की सफलता का अनुभव कराती हैं।

31) संगमयुग पर जो सर्व गुणों का खजाना मिलता है उसे सफल करो तो सदा के लिए गुणमूर्त बन जायेंगे। देखो गुणवान आत्माओं का अभी लास्ट समय तक भी 'सर्व गुण सम्पन्न देवता' के रूप में गायन होता है। स्थूल धन का खजाना सफल करने से 21 जन्मों के लिए मालामाल बन जाते हैं। तो सफल करो और सफलता मूर्त बनो।